शोध मंथन Vol. XIV No.IV Oct.-Dec. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:shodhmanthan.anubooks.com*

पौराणिक आख्यानों में निहित मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता

प्राप्तिः 27.11.2023
स्वीकृतः 20.12.2023

आंचल सक्सेना
शोधार्थी, संस्कृत विभाग
बरेली कालेज, बरेली
एम०जे०पी०रू० विश्वविद्यालय बरेली।
ईमेलः *anchal151190@gmail.com*

95

सारांश

भारतीय साहित्य और संस्कृति आचरणात्मक तथा आदर्शपूर्ण मानवीय मूल्यों के लिए एक अनुपम एवं उत्कृष्ट वैश्विक धरोहर है, जो अपनी असीम व अक्षुण्ण गरिमा, प्रतिष्ठा तथा अनन्त, अद्वितीय प्रासंगिकता को सहस्त्र वर्षों से सिद्ध करती आ रही है। भारतीय धरातल पर उद्गृहीत पुराण साहित्य ही धरती पर मानव मूल्यों की सुदृढ़ आधारशिला रख चुका है, जिसके आधार पर हमारी भव्य एवं अद्वितीय संस्कृति की विशाल अट्टालिका अपनी पूर्ण गरिमा एवं सुदृढ़ निष्ठा के साथ स्थित है।

पुरा अपि नवपुराणंम [1]

पुराण मानवीय मूल्यों को संग्रहण कर मानवीय जीवन के सन्दर्भ में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। ये न सिर्फ मानवीय मूल्यों की भूमिका एवं महत्व को स्वीकारते हैं, अपितु मनुष्य को अपने जीवन में इन मूल्यों को स्वीकार करने तथा आत्मसात् करने की प्रेरणा देते हैं, यहीं मूल्यों के आधार पर जीवन की सर्वोत्कृष्ट उन्नति सम्भव है।

भारत के प्राचीन ऋषियों–मुनियों ने गहन तपस्या एवं स्वाध्याय करके एक ऐसी विचारधारा एवं चिन्तन को नया दृष्टिकोण दिया जिसमें आदर्शवादी दृष्टिकोण का आचरण के क्षेत्र में क्रियान्वयन किया जा सके, जो व्यवहार एवं आचरण में सहयोगी हो, वर्तमान युग में मानवीय मूल्यों के अन्तर्गत उन सभी मूल्यों की गणना की जाती है, जो मनुष्य के जीवन के सभी आवश्यक पक्षों यथा–सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, धार्मिक, मानसिक तथा राजनैतिक आदि से सम्बन्ध रखते है। इन मूल्यों के अभाव में एक स्वस्थ तथा उन्नत समाज की कल्पना करना व्यर्थ है।

विभिन्न पुराणों में देवताओं के विभिन्न स्वरूपों को लेकर इन मानवीय मूल्यों के स्तर पर विषद विवेचन किया गया, जो न सिर्फ मानव जाति के लिए बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि के लिए हितकारी है।

आज वर्तमान युग में सत्यता, सहृद्यता, धैर्य, आचार–विचार, पवित्र संस्कार, धार्मिक विश्वास तथा धारणाए, मानसिक और बौद्धिक विचारों में पवित्रता, रीति रिवाज, ये सभी परम्पराओं के रूप में हमें मानवमूल्य प्राप्त हुए है। ये सभी मानव मूल्य किसी न किसी रूप में आचरण की शुद्धता पर बल देते है, आचरण की शुद्धता के द्वारा ही आत्म शुद्धि सम्भव है तथा आत्म–शुद्धि के द्वारा ही मानव विकास के सर्वोत्कृष्ट शिखर पर पहुँचता है तथा सच्चरित्र का निर्माण होता है।

मनुस्मृति में कहा गया है–

ऋषयों दीर्घसन्ध्यत्वीध मायुखारप्नुयुः।
प्रज्ञा यशश्च कीर्ति च ब्रह्मवर्चसमेव चा।। (2)

वस्तुतः भारतीय नीतिशास्त्र तथा मानवीय मूल्यों की जड़ें पुराण साहित्य में विद्यमान हैं, जो संसार का प्राचीनतम साहित्य हैं। पुराणों में नीति संहिता का एक सरल रूप देखने को मिलता है, इसमें सत्य को सर्वोच्च सद्गुण बताया गया है और असत्य एक दुर्गुण के रूप में चिंहित किया गया है।

विष्णु पुराण में कहा गया है–

साधवः क्षीणः दोषास्तु सछब्दः साधुवाचकः।
तेषामाचरणं यत्तु सदाचारस्य उच्यते।। (3)

अर्थात सत् शब्द का अर्थ साधु है, और साधु वही है जो दोषरहित है। उस साधु पुरूष का जो आचरण होता है, उसी को सदाचार कहते है।

यद्यपि आधुनिक युग पूर्णरूपेण वैज्ञानिकता एवं भौतिकता का युग है, जिसमें अनेक अविष्कार हुए तथा भौतिक सुख को प्राप्त कराने में सहायक अनेक साधनों का निर्माण एवं विकास हुआ है। तथापि अनेक प्रकार से सुसज्जित एवं विकसित हो जाने के बाद भी आज भी विशिष्ट मानवीय मूल्य अपनी महत्ता, सार्थकता एवं प्रासंगिकता को नहीं विस्मूत कर सकते।

पुराणों के अन्तर्गत मानवीय मूल्य को उस व्यवहार समूह की विशिष्टताओं के रूप में इंगित किया गया है, जो मनुष्य के जीवन को उन्नत बना सके।

मानवीय मूल्यों के प्रस्तुत क्रम में धैर्य नामक मूल्य को मनुष्य की सन्तुष्टि प्रवृत्ति से युक्त बताया गया है।

यथा अष्टादश पुराणों में शिरोमणि कहलाने वाले श्रीमद भागवतपुराण में धैर्यवान व्यक्ति की प्रशंसा करतें हुए कहा गया है–

इह सन्तो विषीदन्ति, प्रहश्यन्ति ह्यसाधवः।
धत्ते धैर्य तु यो, धीमान स धीरः पण्डितो ऽथवा।। (4)

अर्थात् इस युग में सज्जन, महात्माजन दुखी रहते हैं, तथा जो लोग अधर्म में लिप्त रहते हैं, सदा आनन्दित रहते हैं, परन्तु विषम परिस्थितियों में भी जो बुद्धिमान व्यक्ति धैर्य धारण किए रहता है, वही धैर्यवान पुरूष ज्ञानी कहलाता है।

मानवीय मूल्यों की स्थापना करना तथा उनके अनुरूप आचरण करना मानव जीवन को सुखमय एवं आनन्दपूर्ण बनाता है।

धैर्य को मानवीय मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित करते हुए गरूड़पुराण में बताया गया है कि मनुष्य को किसी भी कार्य में शीघ्रता की प्रवृत्ति नहीं अपनानी चाहिए।

यथा–

शनैर्विद्या शनैरर्थाः शनै पर्वतमारूहेत।
शनै कामं च धर्म च पञ्चैतानि शनै शनै।। (5)

अर्थात् विद्या और धन का धीरे–धीरे संचय करना चाहिए। धीरे–धीरे ही पर्वत पर चढ़ना चाहिए। धर्म और काम दोनों का ही सेवन धीरे–धीरे करना चाहिए अर्थात् इन पांचों कार्यों में शीघ्रता नहीं करनी चाहिए।

पुराणों मे भारतीय संस्कृति में निहित समस्त मूल्यों का भली–भाँति एवं स्पष्ट रूप से निरूपण किया गया है, फिर चाहे वे सांस्कृतिक पक्ष से सम्बन्धित हो या किसी अन्य पक्ष से सम्बन्धित हो।

भारतीय संस्कृति मानवीय मूल्यों का जो आदर्श रूप धारण करती है, उसका ज्ञान साहित्य के अध्ययन से ही सम्भव है।

भारतीय संस्कृति में परोपकार, दान, क्षमा, सत्यनिष्ठा, कर्तव्यनिष्ठा, त्याग आदि अनेक ऐसे अक्षुण्ण मूल्यों की चर्चा की गई है, जिसका सांगोपांग वर्णन आज से सहस्त्र वर्ष पूर्व पुराणकार ने पुराणों में किया।

दान ऐसे मानवीय गुण या मूल्य है जो मनुष्य के भीतर विद्यमान होकर उसे दूसरे से अलग या विशेष स्थिति प्रदान करता है। इस मानवीय गुण का वर्णन मत्स्य पुराण में राजा बलि का आख्यान विस्तार में वर्णित है राजा बलि ने बामन को तीन पग धरती दान देने का वचन दिया तथा बलि अपनी बात से तनिक भी विचलित नहीं हुए।

दानशीलता के इस गुण को धारण करने वाले राजा बलि के विषय में कहा गया है–

बलि राजा भवतत्रा सर्वेभ्यो दानकर्मणा ।
त्यागी भूत्वातू लोके च कीर्तिमान भवत्रदा।।
दान को कलयुग का कल्पवष्क्ष भी कहा जाता है।। [6]

मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में ही व्यक्ति का आध्यात्मिक पक्ष भी विवेचित किया जाता है। पुराणों के द्वारा मनुष्य के आध्यात्मिक पक्ष को सुदृढ़ बनाने हेतू अनेक आख्यानों का वर्णन किया गया है। आध्यात्मिक पक्ष मनुष्य के धर्म से सम्बन्धित है।

धर्म मनुष्य के अस्तित्व का परिचायक है। धर्म व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक होने वाली सभी क्रिया कलापों से सम्बन्ध रखता है तथा सभी क्रिया कलापों को नियंत्रित भी करता है।

ब्रह्मपुराण के अर्न्तगत प्रयुक्त धर्म शब्द किसी सम्प्रदाय विशेश के लिए नहीं प्रयुक्त हुआ है अपितु कर्तव्यपालन के अर्थ में प्रयोग किया गया है।

धर्म का पालन करना, धर्मानुसार आचरण करना मनुष्य के जीवन में उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करता है। धर्म का पालन करने से मनुष्य न सिर्फ इहलोक अपितु परलोक स्थिति को भी नियमित कर सकता है।

पुराण के अन्तर्गत वर्णित शाश्वत मूल्य सत्यं, शिवम्, सुन्दरम् मनुष्य के धार्मिक पक्ष को न सिर्फ दृढ़ता प्रदान करते है बल्कि उसे वास्तविक सुख से भी अवगत कराते हैं।

श्रीमद्रामायण में माता कौशल्या श्री रामचन्द्र से अपने धर्म का आचरण करने का उपदेश देते हुए कहती हैं–

यंपालयसि धर्मम् त्वम् धष्त्याच नियमेनच।
सर्वे राघव षार्दूला धर्मम्त्वामभिरक्षतु।।

अर्थात् राम तुम जिस धर्म का आचरण करोगे, वही तुम्हारी रक्षा करेगा।

अपने विचारों को या तर्क को वाणी रूप में प्रकट करना, भी मानवीय मूल्य की श्रेणी में आता है। यदि मनुष्य अत्यन्त ज्ञानी भी है तथापि वह अपने ज्ञान अथवा विचारों को प्रसारित नहीं कर पा रहा है तो उसका अर्जित ज्ञान निरर्थक है

यथा गरूड़पुराण में कहा गया है–

वागयन्त्रहीनस्य नरस्य विद्या
शस्त्रं यथा कापुरूशस्य हस्ते।
न तुष्टिमुत्पादयते शरीरे
अन्धस्य दारा इव दर्शनीयः।।[7]

अर्थात वाणीविहीन मनुष्य की विद्या डरपोक के हाथ में शस्त्र के समान निरर्थक है। उसका उसी भाँति कोई फल नहीं निकलता, जैसे दर्शनीय नारियों के रूप सौन्दर्य का कोई प्रभाव अन्धे मनुष्यों पर नहीं पड़ता।

सामान्यतः मनुष्य की पहचान उसके व्यवहार अथवा आचरण से की जाती है। संस्कृत साहित्य में मनुष्य द्वारा अनुकरणीय व्यवहार के प्रतिमान को विस्तृत रूप में वर्णित किया गया है।

मनुष्य के आचरण पर यदाकदा उसकी संगति का भी प्रभाव देखने को मिलता है यदि संगति अच्छी है तो मनुष्य सभी उपयुक्त मानवीय मूल्यों का आदर कर उन्हें अपने जीवन में उतारने को प्रयास करता है। पुराणगत साहित्य भी हमें कुसंगति से बचकर रहने की प्रेरणा देता है।

गरूड़पुराण में कुसंगति को लोक विनाशक की संज्ञा देते हुए कहा गया है–

सद्भिः सगं प्रकुर्वीत सिद्धीकामः सदा नरः।
नासद्भिरिहलोकाय परलोकाय वा हितम्।।[8]

अर्थात् सिद्धि की कामना रखने वाले मनुष्य को सज्जनों की संगति करनी चाहिए। असज्जनों की संगति से न तो इस लोक में कल्याण होता है और न ही परलोक में।

गरूड़पुराण में बताया गया है कि विवाद तथा मैत्री भी सज्जनों के साथ ही करना चाहिए क्योंकि दुर्जनों के साथ की गयी मित्रता अथवा ईर्ष्या विनाशकारी परिणाम देती है।

सत्यनिष्ठा, मानवीय मूल्य के रूप में मनुष्य का अलंकार बताया गया है। भारतीय संस्कृत साहित्य में मनुष्य को सत्य बोलने तथा प्रिय बोलने की प्रेरणा दी गयी है।

जैसा कि स्कन्दपुराण में बताया गया है कि–

सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात सत्ययप्रियम।
प्रियं च नांनष्त ब्रूयादेश धर्मों विधीयतें।।[9]

सत्य बोलना और प्रिय बोलना धर्म के आचरण के अन्तर्गत आता है असत्य भाषण से न सिर्फ धर्म के विरूद्ध आचरण करता है वल्कि पाप का भागीदार भी बनता है।

अतः सत्य से पवित्र हुई वाणी ही बोलनी चाहिए और जो मन से पवित्र हो उसी का धर्म पूर्वक आचरण करना चाहिए।

सत्यपूतां वदेद् वाणी मनःपूतं समाचारेत्।

ये सभी मानवीय मूल्य मानवता को गरिमा प्रदान करते हैं। मानवीय मूल्यों से युक्त मनुष्य उस श्रेणी में आता है जहाँ उसका जीवन पुरूषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति कर लेता है।

सन्दर्भ

1. शास्त्री, रतिराम. (अध्यक्ष). (2009). निरूक्त (3.19.24.). साहित्य भण्डारः सुभाष बाजार, मेरठ।
2. मनुस्मृति. (2.14.1). नवीनतम संस्करण. महालक्ष्मी प्रकाशनः आगरा।
3. (2020). विष्णुपुराण (11/3). गीताप्रेसः गोरखपुर।
4. कल्याण अंक. नीतिसार. पृष्ठ **63.**
5. गरूड़ की नीतिसारावली. गीताप्रेस, गोरखपुर. पृष्ठ **443.**
6. (2016). अष्टादश पुराण परिचय. चौखम्भा संस्कृत भवनः वाराणसी. पृष्ट **82.**
7. (2016). गरूड़पुराण की नीति सारावली. चौखम्भा संस्कृत भवनः वाराणसी।
8. (2016). अष्टादशपुराण – गरूड़पुराण. चौखम्भा संस्कृत भवनः वाराणसी।
9. (2016). ब्रा॰ध॰मा॰ स्कन्दपुराण. 6/88. गीताप्रेस, गोरखपुर.